

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editors
Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

Contents

Section-1 (A) : Jain Philosophy

1. प्राचीन जैन साहित्य में शरीर और चिकित्सा विज्ञान 3-16
प्रो. दामोदर शास्त्री
2. आगम व्याख्या-साहित्य में प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त 17-27
प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा
3. आचार्य महाप्रज्ञ-साहित्य में अध्यात्म-विकास की भूमिकाएं 29-42
प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा एवं डॉ. समणी श्रेयसप्रज्ञा
4. जैनदर्शन में समुद्घात की अवधारणा 43-57
समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा
5. **Number Theory: A Mathematical Solution of Metaphysical Problems in Jaina Āgama** 59-72
Dr Samani Vinay Pragya
6. **Communication and our Relations** 73-84
Dr Samani Aagam Pragya
7. जैन परंपरा में मान्य सूर्य एवं चन्द्रमाँ का स्वरूप 85-95
डॉ. योगेश कुमार जैन
8. पर्यावरण संरक्षण और जैन धर्म 97-103
डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
9. पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन 105-119
डॉ. समणी हिमप्रज्ञा
10. सामायिक आवश्यक : एक अनुशीलन 121-141
डॉ. मुमुक्षु वन्दना मेहता

Section-1 (B) : Experimental Researches on Preksha Meditation

11. **Role of Preksha Meditation in Improvement of Blood Count and Biochemistry of Adults** 145-154
Dr Pradyumna Singh Shekhawat

सामायिक आवश्यक : एक अनुशीलन

*डॉ. मुमुक्षु वन्दना मेहता

सारांशिका

सामायिक जैन साधना पद्धति का सार है। आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा इन सब घटनाचक्रों में सम रहना, अप्रकंप रहना साधना का सर्वोच्च शिखर है। इस शिखर पर आरोहण करने का साधन है सामायिक। हिंसा, असत्य, संग्रह ये सब विषमता की ओर ले जाते हैं। इनसे मुक्त होने का अभ्यास है सामायिक। समता का महत्त्व हर धर्म में उद्धृत हुआ है। जैन परम्परा में सामायिक आवश्यक का विस्तार से प्रतिपादन हुआ है। जिसमें उसके भेद, प्रभेद, कालस्थिति, पात्रता आदि का गहन चिन्तन किया गया है। श्रमण जीवन में तो इसका महत्त्व है ही लेकिन गृहस्थ भी दैनन्दिन जीवन में सामायिक के अभ्यास से समता को जीवन में प्रतिष्ठित कर सकता है। सामायिक साधना के द्वारा शांतिपूर्ण सौहार्दमय जीवन जीने का अभ्यास किया जा सकता है।

इस शोध-आलेख के माध्यम से इस महत्त्वपूर्ण विषय पर प्राप्त मूल-ग्रंथों साम्रगी को सुव्यवस्थित और विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत करने का लघुप्रयास किया जा रहा है। अनेक अल्पपरिचित तथ्यों को उजागर किया जा रहा है।

सम्बद्ध शब्द : सामायिक, आवश्यक।

*सहायक आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनू 341306 (राजस्थान)